International Journal of Applied Research 2023; 9(5): 344-348

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(5): 344-348
www.allresearchjournal.com
Received: 25-03-2023
Accepted: 29-04-2023

डॉ. विद्याधर सिंह
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विद्याधर सिंह
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू और कश्मीर, भारत

नीतिपरक संस्कृत–साहित्य को भर्तृहरि का योगदान

डॉ. विद्याधर सिंह

सारांश
नीति शब्द का अर्थ मार्ग को प्रशस्त करने का नियम है। मनुष्य अपने व्यवहार या आचरण से जिन नियमों या सिद्धान्तों एवं निर्देशों को निश्चित करता है, उसे ही नीति कहते हैं। इससे मनुष्य का जीवन ऊर्ध्वगामी बनता है। वस्तुतः नैतिकता ही जीवन है और अनैतिक घृण्य है। मानवता की पृष्ठभूमि नैतिकता ही है। नैतिकता की अनादि और अनन्त धारा से अनभिज्ञ व्यक्ति मिथ्या भ्रम में ही अनैतिक कर्म में सुख की कल्पना करता है। नैतिक जीवन की अनुभूति से शून्य व्यक्ति का पाशविक जीवन होता है। भर्तृहरि की नीतिशतक एवं वैराग्यशतक, नीतिपरक इन दोनों ही रचनाओं से विदित होता है कि उन्हें संसार का व्यापक अनुभव था। इनमें उन्होंने समाज को जो उपदेश और आदेश दिये हैं, उसकी प्रवृत्ति ऋग्वेदादि ग्रन्थों से ही दिखाई देती है। उन्होंने अपनी कृतियों में मानव–जीवन के विविध पक्षों के यथार्थ स्वरूप को चित्रित किया है। भर्तृहरि के परवर्ती नीतिविषयक साहित्यकारों में आचार्य शंकर, आचार्य क्षेमेन्द्र, जल्हण, शिल्हण, धनदराज द्या द्विवेदी तथा पण्डितराज जगन्नाथ प्रभृति अनेक काव्यकारों के नाम एवं उनकी कृतियाँ उल्लेखनीय हैं। इनमें से कई नीतिकाव्यकारों की कृतियों पर भर्तृहरि का प्रभाव देखा जा सकता है।

कूटशब्दः आचारनिष्ठ, ऊर्ध्वगामी, अन्वेषण, पदलालित्य, अनुभवजन्य, मुमुक्षु, ब्रह्मप्रणीत, स्वायम्भुव, बार्हस्पत्य, अभ्युन्नति, सानुप्रास, मोहमुद्गर, कलिविडम्बन, सभारंजनशतक

प्रस्तावना
प्रेरणार्थक 'णीञ् प्रापणे' धातु से निष्पन्न नीति शब्द का व्युत्पत्ति लभ्य अर्थ 'प्राप्त करना' है अर्थात् जीवन को पाना और जीवन को वही पा सकता है, जो नीतिवान् है। इस प्रकार नीति एक आचारनिष्ठ व्यक्ति से प्रेरित ऐसा शब्द है, जो जीवन को सदैव ऊर्ध्वगामी बनाता है। 'नी' धातु के ले जाने अर्थ का अभिप्राय मार्ग को दर्शाने से है। इस दृष्टि से नीति शब्द का अर्थ मार्ग को प्रशस्त करने का नियम है। 'नयति इति नीतिः', नयनात् नीतिरुच्यते' अथवा 'नीयते अनया विश्वमिदं सम्यक्तया' प्रभृति व्यावहारिक परिभाषाओं के अनुसार 'नी' धातु सामान्य रूप से लोकव्यवहार का वाचक है।

मनुष्य, जीवन को जानने और समझने की प्रक्रिया में अपने रहन–सहन, राजनीति तथा समाज आदि से सम्बन्धित अनुभवों एवं व्यवहार के आधार पर जिन नियमों और निर्देशों को निश्चित करता है, वे ही उसके पथ को प्रदर्शित करते हैं। ये यह बताते हैं कि उसका जीवन, आचरण या व्यवहार तथा समाज और संसार किस प्रकार का होना चाहिए। ये पथप्रदर्शक या लोकाचार की शिक्षा ही जीवन–सूत्र को प्रतिपादित करते हैं। इस प्रकार से जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन में ऊपर उठता है या जिसके द्वारा ऐहिक और पारलौकिक सफलता के उपाय आदि सिद्ध किये जाते हैं, उसे ही नीति कहते हैं – नीयन्ते उन्नीयन्तेऽर्था अत्रानया वा (वाचस्पत्यम्), नीयन्ते संलभ्यन्ते उपायादम ऐहिकामुष्मिकार्थ वास्यामनया वा (शब्दकल्पद्रुम)। इस तरह इन्द्रिय आदि को संयमित कर, उचित–अनुचित को जानकर सन्मार्ग का अन्वेषण करते हुए विनय–मार्ग में गमन करना नीति है। सभी के प्रति आत्मवत् प्रीति ही नीति है और इससे भिन्न अनीति है। वस्तुतः अन्यों के प्रति पवित्र प्रेम ही नैतिक जीवन का मूलाधार है और नीति के ज्ञान–सम्पादन में सहायक साहित्य को नीति–साहित्य कहते हैं या यह नीति–साहित्य नीतिपरक अनुचिन्तन का प्रतिफल है। शुक्रनीति में नीति की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है –

सर्वलोकव्यवहारस्थितिर्नीत्या विना नहि।
यथाऽशनैर्विना देहस्थितिर्न स्याद्धि देहिनाम्।।[1]

संस्कृत–नीतिकाव्य एवं भर्तृहरिः संस्कृत–नीतिकाव्य–धारा में भर्तृहरि का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावों तथा विचारों को कलात्मक ढंग से सफलता पूर्वक अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत क्षमता भर्तृहरि की वह विशेषता है, जो उनको संस्कृत–साहित्य के मूर्धन्य कवियों के बीच स्थान दिलाती है। उनके द्वारा रचित नीतिशतक एवं वैराग्य शतक दोनों ही अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ हैं। इनके पद भारतीय जनता की रसना पर नृत्य करते हैं। उनकी सरल एवं व्यावहारिक शैली और उनका पदलालित्य अत्यन्त मनोहारी है। भाषा इतनी सरल, स्वाभाविक और सुबोध है कि कवि का तात्पर्य पद्यों को एक बार पढ़ने से ही भली भाँति ज्ञात हो जाता है। उनकी रचनाओं के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि उन्हें संसार का बहुत विशाल अनुभव था। सम्भवतः यही कारण है कि उन्होंने दैनिक जीवन के गूढ़ एवं प्रत्यक्ष सत्यों को बड़े हृदयग्राही ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके पद्यों में मानव–प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण तथा कवि की सच्ची अनुभूति की मार्मिक व्य०जना है। कहीं नीति के अनुभवजन्य उपदेश निर्दिष्ट हैं तो कहीं वैराग्य का शुभ्र–प्रकाश वितरित है। किसी भी आयु अथवा स्वभाव का मनुष्य क्यों न हो, भर्तृहरि की कृतियों से आनन्द प्राप्त करता है। नीतिमार्ग पर चलने के लिए उत्सुक लोगों के लिए नीतिशतक है, तो मुमुक्षुओं के लिए वैराग्यशतक।

नीतिपरक संस्कृत–साहित्य को भर्तृहरि के योगदान सम्बन्धी विवेचन से पूर्व संस्कृत में नीतिकाव्य के उद्‌भव एवं विकास तथा कालक्रम की दृष्टि से उनसे पूर्व प्राप्त होने वाले कतिपय नीतिशास्त्रों का संक्षिप्त विवेचन अपेक्षित है।

संस्कृत–नीतिकाव्य का उद्‌भव एवं विकासः संस्कृत में नीतिकाव्य के उद्‌भव एवं विकास में धर्म और दर्शन का प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के संस्कृत–साहित्य में हमें आदेश या उपदेश की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। यह प्रवृत्ति ऋग्वेद में भी विद्यमान है। ऋग्वेद और ऐतरेय ब्राह्मण में हमें नीति विषयक पद्य प्राप्त होते हैं। महाभारत में सूक्त्यात्मक और उपदेशात्मक दोनों प्रकार का विषय बहुलता से पाया जाता है। दर्शन, सदाचार, जीवन के लिए व्यावहारिक शिक्षा, युद्ध–स०चालन के साथ अपने व्यापकतम अर्थों में दण्डनीति के नियम, इन विषयों पर अवस्थित रूप में विचारों का ढेर पाठक के समक्ष प्रक्षिप्त कर दिया गया है। इस प्रकार नीति–पद्यों का विकास ऋग्वेद से ही माना जा सकता है। नीतिवचन, लोकोक्ति, आभाणक, सुविचार आदि हमें ऋग्वेद के सूक्तों में बहुतायत से उपलब्ध होते हैं। ये ब्राह्मणग्रन्थों में सुभाषितों के रूप में गृहीत हुए और तदुपरान्त साहित्य मे इनका विकास हुआ। जातक साहित्य में भी सुभाषित जनता में लोकप्रिय रहे। ये सुभाषित बड़े मार्मिक हैं।

नीतिशास्त्र का उद्‌भवः भारतीय परम्परा में जिस प्रकार योग, आयुर्वेद आदि विविध विद्याओं का आद्य प्रवक्ता ब्रह्मा को माना गया है, उसी प्रकार नीतिशास्त्र का भी प्रथम आचार्य ब्रह्मा को ही स्वीकार किया गया है। महाभारत के अनुसार ब्रह्मा ने संत्रस्त देवताओं की प्रार्थना पर एक लाख अध्यायों में 'नीतिशास्त्र' या 'दण्डनीति' की रचना की।[2] इसी ग्रन्थ (महाभारत) में ही नीति–शास्त्र के प्रचारक के रूप में स्वायम्भुव मनु का नाम आता है तथा इसी मानवशास्त्र के आधार पर उशना और बृहस्पति ने अपने–अपने नीतिशास्त्र की रचना की। शुक्रनीतिसार के अनुसार ब्रह्मप्रणीत नीतिशास्त्र मे एक करोड़ श्लोक थे[3], किन्तु भगवान शङ्कर ने उसे दस हजार अध्यायों में संक्षिप्त कर दिया।[4] इस संक्षिप्त शास्त्र का नाम 'वैशालाक्ष नीतिशास्त्र' पड़ा।[5] इन्द्र ने इसे पांच हजार अध्यायों में और 'बृहस्पति ने तीन हजार अध्यायों में इसका सार प्रस्तुत किया[6] तथा अन्त में शुक्राचार्य ने एक हजार अध्यायों में उसका संक्षेप किया, जिसमें 2200 श्लोक थे।[7] आचार्य कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में पाँच सम्प्रदायों का उल्लेख किया है – मानव, बार्हस्पत्य, औशनस, पाराशर और आम्भीय।[8] इसके साथ ही कुछ अन्य आचार्यों के नामों का भी उल्लेख हुआ है। उन्होंने कुछ अज्ञात आचार्यों का भी संकेत किया है।

कामसूत्र के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा द्वारा प्रणीत एक लाख श्लोकों वाले शास्त्र में वर्णित धर्मविषयक अंश पर स्वायम्भुव मनु ने आचारशास्त्र का एक पृथक् संस्करण तैयार किया[9], जो 'मानवधर्मशास्त्र' के नाम से विख्यात है और उसके अर्थविषयक भाग को पृथक् कर आचार्य बृहस्पति ने 'अर्थशास्त्र' की रचना की[10], जो 'बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शुक्रनीति में वसिष्ठ आदि को नीतिसार का संग्रहकर्ता बताया गया है।[11] राजशास्त्र के प्रतिष्ठापक के रूप में मनु, बृहस्पति, शुक्र, पराशर, पराशरपुत्र (व्यास) तथा चाणक्य का उल्लेख मिलता है –

मनवे वाचस्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय।
चाणक्याय विदुषे नमोऽस्तु नय शास्त्रकर्तृभ्यः।[12]
वर्तमान में स्वतन्त्र रूप से नीतिशास्त्र के तीन ग्रन्थ –

कौटिल्य अर्थशास्त्र, शुक्रनीतिसार और चाणक्यसूत्र उपलब्ध होते हैं।

शुक्रनीतिसारः दण्डनीति तथा राजधर्म प्रतिपादक 'शुक्रनीतिवार' से आचार्य शुक्र का साक्षात् सम्बन्ध है या नहीं, यह सिद्ध करना कठिन कार्य है, क्योंकि इसके नाम से तो यही प्रतीत होता है कि यह ग्रन्थ शुक्रनीति का सार ग्रन्थ है, परन्तु 'शुक्रनीति' कुटिल नीति–शास्त्रीय ग्रन्थों में सर्वोपरि है तथा भारतीय नीतिशास्त्र के इतिहास में आचार्य शुक्र का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कुछ विद्वान् इस ग्रन्थ को 16वीं शताब्दी की रचना मानते हैं, जो कि उचित नहीं है, परन्तु अन्तः साक्ष्य के आधार पर इतना तो निश्चित है कि इसकी रचना गुप्तकाल में या उससे पूर्व हुई है। इसके दो–तीन पद्य यहाँ प्रस्तुत हैं –

न पीडयेदिन्द्रियाणि न चैतान्यतिलालयेत्।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः।।
नदीं तरेन्न बाहुभ्यां नाग्निं छन्नमभिव्रजेत्।
सन्दिग्धनावं वृक्षं च नारोहेद् दुष्टयानकम्।।
षड् दोषा पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्र भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता।
प्रभवन्ति विघाताय कार्य्यस्यैते न संशयः।।[13]

चाणक्य : सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधानमन्त्री चाणक्य का अर्थशास्त्र यद्यपि राजनीतिविषयक अपूर्व ग्रन्थ है जो कि सामान्यतः गद्य में है, किन्तु इसमें कहीं–कहीं कुछ नीतिविषयक पद्य भी हैं। इनके विषय में कामन्दकीय नीतिसार में लिखा है –

नीतिशास्त्रामृतं धीमानर्थशास्त्रमहोदधेः।
समुद्‌दध्रे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे।।[14]

आचार्य चाणक्य की चाणक्यनीति नीतिपरक पद्यों से पूरित है। इसमें व्यावहारिक सामान्य नीति सम्बन्धी शाश्वत सत्य के द्योतक श्लोक प्राप्त होते हैं। ये श्लोक सरल भाषा–शैली में निबद्ध हैं। जैसे –

आपदर्थे धनं रक्षेच्छ्रीमतां कुतः आपदः।
कदाचिच्चलते लक्ष्मीः स०चितोऽपि विनश्यति।।
माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।
रूपयौवनसम्पन्नः विशालकुलसम्भवाः।

विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः।।
उद्योगे नास्ति दारिद्रयं जपतो नास्ति पातकम्।
मौने च कलहो नास्ति नास्ति जागरिते भयम्।।[15]

चाणक्य द्वारा रचित एक अन्य नीतिशास्त्र भी प्रसिद्ध है। इसके कई संस्करण उपलब्ध हैं परन्तु इनमें पर्याप्त भेद है। इसमें सभी प्रकार के नीति वचन मिलते हैं।

भर्तृहरि से पूर्व रचित नीतिपरक संस्कृत–साहित्य में मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य–स्मृति, नारदस्मृति आदि उल्लेखनीय हैं। इन स्मृति ग्रन्थों में भी नीति–सम्बन्धी समावेश है। मनुस्मृति में नैतिक शिक्षा–सम्बन्धी उत्कृष्ट कारिकाएँ हैं। इसी प्रकार याज्ञवल्क्य स्मृति तथा नारदस्मृति में भी मार्मिक नीति–सम्बन्धी बहुत सी बातें संस्कृत पद्यों में मिलती हैं।

कामन्दक का 'नीतिसार' ग्रन्थ संस्कृत पद्य में रचित है और यह नीति–सम्बन्धी सूक्तियों का संग्रह है। इस ग्रन्थ से कई नीति–सूक्तियाँ 'हितोपदेश' आदि ग्रन्थों में उद्धृत की गई हैं।

प्रायः नीतिकाव्यों में सदाचार, शिष्टाचार आदि की चर्चा के साथ संसार की असारता भी वर्णित है। सुख, संसार को असार समझकर इच्छाओं के त्यागने में है। यह उल्लेख किया जा चुका है कि नीतिपरक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत भर्तृहरि के द्वारा रचित दो ग्रन्थों की गणना की जाती है – 1. नीतिशतक एवं 2. वैराग्य शतक। दोनों ही रचनाएँ भावपक्ष एवं कलापक्ष, दोनों ही दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है तथापि इनमें कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष की ही प्रबलता है। भर्तृहरि ने अपनी कृतियों में मानव–जीवन के विविध पहलुओं का यथार्थ चित्रण किया है और भाषा, भाव, छन्द एवं अलङ्कारों पर पूर्ण अधिकार कर लिया है। इस प्रकार भाव–सौष्ठव, भाषालालित्य, छन्दों एवं अलङ्कारों का समुचित चयन आदि गुणों ने भर्तृहरि के शतकों को अनुपम बना दिया है।

संस्कृत के काव्य–साहित्य में उपदेशात्मक नीति–विषयक सूक्तियों के अन्दर धर्म, दर्शन, सामाजिक सद्भाव, लोक–व्यवहार, सदाचार, राजनीति आदि गम्भीर विषयों का सरल काव्यमयी भाषा में प्रतिपादन है। सूक्तिकारों ने जीवों की अभ्युन्नति को दृष्टि में रखकर सुमार्ग एवं कुमार्ग की भलाई–बुराई का परीक्षण किया है, मनुष्यों की सद्वृत्ति एवं असद्वृत्तियों का विश्लेषण कर सर्वत्र मैत्रीभाव की आस्था को बलवत्तर बनाया है और पुरुषार्थ को सर्वोपरि स्थान दिया है। इनके पद्य प्रसाद एवं माधुर्यगुण सम्पन्न एवं मनोहारी हैं। नीतिशतक की परोपकार–पद्धति से सङ्कलित निम्नाङ्कित पद्य में सानुप्रास पदावली का लालित्य भाव की सुन्दरता को अत्यधिक बढ़ा देता है –

मनसि वचासि काये पुण्यपीयूषपूर्णा स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः पूरयन्तः।
परगुण–परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।[16]

इसी प्रकार नीतिशतक का यह पद्य प्रायः उद्धृत किया जाता है –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।[17]

नीतिशतक में जिन तथ्यों को कवि ने प्रस्तुत किया है, वे आज भी सामाजिक स्थिति में उतने ही सटीक हैं, जितने कवि के लेखन काल में थे। संसार में सब कुछ क०चन के आश्रित हैं, गण भी, द्रष्टव्य –

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणा का०चनमाश्रयन्ति।।[18]

नीतिशतक में बड़ी सुन्दर सूक्तियाँ हैं। यहाँ यह पद्य द्रष्टव्य है –

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितःसर्पः किमसौ न भयङ्कर।।[19]

वैराग्यशतक में भर्तृहरि कारुण्य और निराकुलता के साथ संसार की सारहीनता तथा वैराग्य की आवश्यकता समझाई है। इसमें कवि आकर्षण से विकर्षण की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। उनकी दृष्टि में तपस्वी जीवन ही श्रेयस्कर है। उन्होंने संसार को एक विचित्र पहेली के रूप में चित्रित किया है। वे कहते हैं – कहीं वीणा की मधुर तान सुनाई पड़ती है, तो कहीं विलाप और हाहाकार का करुण–स्वर, कहीं विद्वानों की सभा हो रही है, तो कही सुरापान से उन्मत्त लोगों का कलह दिखाई पड़ता है। कहीं सुन्दर रमणियाँ दृष्टिगोचर होती हैं तो कहीं कुष्ठ–पीड़ित शरीरों के बहते हुए घाव। अतः पता नहीं यह संसार अमतमय है या विषमय, वरदान है या अभिशाप। उन्होंने कहा है – सांसारिक विषयों का भोग करते हुए मनुष्य स्वयं समाप्त हो जाता है, परन्तु विषय यथावत् बने रहते हैं। इसी भाव को कवि ने बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया है – भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।[20]

उनका कथन है कि मुख पर झुरियाँ पड़ जाने पर भी, सिर के बाल सफेद हो जाने पर भी तथा अङ्ग–प्रत्यङ्ग के शिथिल हो जाने पर भी भोग–तृष्णा तरुणी ही बनी रहती है –

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्त तृष्णैका तरुणायते।।[21]

भर्तृहरि की दृष्टि में एक निर्लिप्त मुनि भी ऐश्वर्यशाली सम्राट् के तुल्य ही सुख का अनुभव करता है, यद्यपि दोनों के सुख का मापदण्ड भिन्न है –

मही रम्या शय्या विपुलमुपधानं भुजलता, वितानं चाकाशं व्यजनमनुकूलोऽयमनिलः।
स्फुरद्दीपश्चन्द्रो विरतिवनितासङ्गमुदितः सुखं शान्तः शेते मुनिरतनुभूर्तिर्नृप इव।।[22]

वैराग्य ही वास्तविक सुख को देने वाला है, क्योंकि आसक्ति ही मनुष्य के लिए दुःख का कारण होती है। जब मनुष्य संसार की प्रत्येक वस्तु तथा सम्बन्ध का ही त्याग कर देता है तो वह हर प्रकार के बन्धन से मुक्त हो जाता है।

वैराग्यशतक कवि का सर्वस्व है। काव्य–प्रतिभा एवं दार्शनिकता का ऐसा सुन्दर संयोग अन्यत्र प्राप्त नहीं होता।

नीतिविषयक संस्कृत–साहित्यकारों में भर्तृहरि के परवर्ती अनेक साहित्यकारों के नाम उपलब्ध होते हैं, जिनमें कतिपय साहित्यकारों पर भर्तृहरि का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनकी रचनाओं के दृष्टिगत यह स्वीकार करने में कोई सन्देह नहीं कि वे भर्तृहरि से ही प्रेरित रहे हैं। यहाँ भर्तृहरि के परवर्ती कतिपय नीतिकाव्यकारों के नामों का उल्लेख उनकी कृतियों के साथ किया जा रहा है –

भर्तृहरि के परवर्ती नीतिपरक संस्कृत–साहित्यकारों में जगद्गुरु शङ्कराचार्य का नाम उल्लेखनीय है। इनके नाम से कुछ नीतिकाव्य प्रसिद्ध हैं, जिनके नाम 'शतश्लोकी' तथा 'मोहमुद्गर' हैं। शतश्लोकी में कुल 101 पद्य हैं और समस्त पद्य स्रग्धरा वृत्त में निबद्ध हैं। आचार्य शङ्कर ने इसमें वेदान्त के सिद्धान्तों का कुछ अंश तक समृद्ध शैली में निरूपण किया है। इनका द्वितीय ग्रन्थ – मोहमुद्गर भर्तृहरि के वैराग्यशतक की भाँति वैराग्यपरक रचना है, जिसमें मोह–पराजय तथा विवेकोदय की चर्चा है। यह उपदेशात्मक की अपेक्षा गीति–प्रधान काव्य है। इसमें आचार्य

शङ्कर ने विषय–वासनाओं को छोड़ने और मायाजाल से मुक्त होने का उपदेश दिया है, साथ ही इसमें नैतिक और दार्शनिक भावों की भी प्रधानता है। इस प्रकार आचार्य शङ्कर की नीतिपरक इन रचनाओं से स्पष्ट होता है कि उनके ग्रन्थों में श्लोक–संख्या आदि तथा विशेषतः मोहमुद्गर में विवेचित विषयवस्तु आदि की दृष्टि से कहीं न कहीं भर्तृहरि के ग्रन्थों, प्रमुखतः वैराग्यशतक का प्रभाव है। यद्यपि भर्तृहरि के नीतिपरक ग्रन्थों में शृङ्गारशतक का उल्लेख नहीं मिलता है तथापि उनके शृङ्गारशतक के ही तुल्य कालान्तर में किसी अज्ञात कवि द्वारा रचित 'शृङ्गारज्ञाननिर्णय' नामक रचना की चर्चा मिलती है। इसमें बत्तीस पद्यों में शृङ्गार और ज्ञान का विवाद प्रदर्शित है, जिसमें शृङ्गार का पक्ष रम्भा अप्सरा के द्वारा और तत्वज्ञान का पक्ष शुकदेव द्वारा रखा गया है। यह उपदेशात्मक काव्य का उत्कृष्ट रूप है।

कल्हण ने राजतरङ्गिणी में दामोदरगुप्त का उल्लेख एक कवि के रूप में किया है। ये कश्मीर के राजा जयपीड़ (779–813 ई.) के मन्त्री थे। इनकी रचना 'कुट्टनीमत' है और यह वेश्यावृत्ति से सम्बन्धित है। इसमें एक युवती वेश्या को उसके पेशे की कलात्मकता की शिक्षा दी गई है। यह काव्य अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और अलङ्कार शास्त्र में इसके पद्य उदाहरण के रूप में उद्धृत किये गये। यहाँ पर इसका एक पद्य प्रस्तुत है –

एतावति संसारे परिगणिता एव ते सुजन्मानः।
आपत्सु परित्राणव्याकुलमनसां स्फुरन्ति ये वृद्धौ।।[23]

इसमें भर्तृहरि की रचनाओं का प्रभाव तो दिखाई नहीं देता है, परन्तु प्रतीत होता है कि इसकी रचना में कवि ने कामसूत्र आदि का उपयोग किया है।

संस्कृत–नीतिपरक काव्यधारा में महाकवि क्षेमेन्द्र का उल्लेख न हो ऐसा सम्भव नहीं है। क्षेमेन्द्र ने अनेक नीतिपरक तथा उपदेश काव्यों का सृजन किया है। ये दामोदरगुप्त के 'कुट्टनीमत' से स्पष्टतः प्रभावित प्रतीत होते हैं और सम्भवतः इसी से प्रभावित होकर 'समयमातृका' (समय द्वारा माता) की रचना की है। इसमें एक कुट्टनी द्वारा एक युवती को वेश्याकर्म की शिक्षा दी गई है। इनकी नीति सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण रचना 'कलाविलास' है। दश परिच्छेदों में विभक्त यह रचना मनुष्य के विभिन्न व्यवसायों एवं व्यवहार की अकुशलता पर नीति एवं उपदेश–संयुक्त विचार व्यक्त करती है। इसका एक पद्य यहाँ द्रष्टव्य है –

नहि नाम सज्जनां युद्धयशः स्फटिकदर्पणो विमलः।
परिभवदुःखितजनतानिःश्वासैर्मलिनतामेति।।[24]

क्षेमेन्द्र का एक अन्य नीतिपरक काव्य 'दर्पदलन' है। यह सात खण्डों वाली रचना है। इसमें उच्चकुल, धन, विद्या, सुन्दरता, साहस, दान एवं वैराग्य के गर्व की व्यर्थता प्रदर्शित की गई है। इसका भी यहाँ एक पद्य प्रस्तुत है –

कुलाभिमानं त्यज संवृताग्रं धनाभिमानं त्यज दृष्ठनष्टम्।
विद्याभिमानं त्यज पण्यरूपं रूपाभिमानं त्यजकाललेह्यम्।।[25]

क्षेमेन्द्र के देशोपदेश तथा नर्ममाला नामक दो उपदेश काव्य हास्य एवं व्यंग्यपूर्ण हैं। देशोपदेश आठ उपदेशों से युक्त है। इस रचना का उद्देश्य लोगों को दोषों से बचाना है, क्योंकि अपने दोष पर दूसरों को हँसते देखकर लोग ऐसे कार्यों से बचते हैं।

नर्ममाला के तीन परिच्छेद हैं। इसमें कवि ने तत्कालीन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों एवं परिस्थितियों का वर्णन किया है। महाकवि क्षेमेन्द्र के अन्य नीतिपरक साहित्यों में 'सेव्यसेवकोपदेश' नामक 61 श्लोकों की रचना है। इसमें सेवकों और उनके स्वामियों के सम्बन्ध शिक्षा दी गई है। इसका एक श्लोक प्रस्तुत है :–

सन्तोषः परमः पुराणपुरुषः संविन्मयः सेव्यताम्।
यत्स्मृत्या न भवन्ति ते सुमनसां भूयो भवग्रन्थयः।।[26]

इनकी एक अन्य रचना 'चारुचर्याशतक' 100 श्लोकों में निबद्ध है। इसमें सद्व्यवहार के नियम निरूपित हैं और इन नियमों की पुष्टि एव स्पष्टीकरण आख्यान एवं कथाओं से किया गया है।

इसी क्रम में शम्भुकवि विरचित अन्योक्तिमुक्तालता' नामक 108 श्लोकों वाला ग्रन्थ भी प्राप्त होता है। शम्भुकवि कश्मीर नरेश हर्ष (1089–1109 ई.) के आश्रित थे। इस ग्रन्थ से एक अन्योक्ति यहाँ प्रस्तुत है –

इयं यदि रदच्छदच्छविः पाटला पाटला नताङ्गि तव चेदियं चिरकि०चनं का०चनाम्।
किमन्यदमृतद्रवः श्रवणयोरिदं चेद्वचः क्व न भ्रमरयोषितां गल दहंकृतिर्हुंकृतिः।।[27]

अन्य साहित्यकारों में हेमचन्द्र, जल्हण तथा शिल्हण भी है। इनमें से हेमचन्द्र की रचना 'योगशास्त्र' है। इसमें जैनदर्शन का वर्णन है। 'मुग्धोपदेश' तथा 'सुभाषित मुक्तावली' नामक कृतियाँ जल्हण की हैं। इनकी रचना–शैली पर महाकवि क्षेमेन्द्र का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

'शान्तिशतक' संज्ञक रचना शिल्हण कवि ने 1205 ई. के आस–पास की थी। यह ग्रन्थ भर्तृहरि के वैराग्यशतक तथा नीतिशतक के अनुकरण पर निर्मित है। इस प्रकार इनकी रचना को स्पष्टतः भर्तृहरि की नैतिक शिक्षाओं तथा सांसारिक आकर्षणों एवं भोग–विलासों के प्रति औदासीन्य से प्रभावित माना जा सकता है। लेखक ने इसमें मानसिक शान्ति में ही वास्तविक आनन्द की प्राप्ति का वर्णन किया है और मानसिक शान्ति के लिए अभ्यास करने की प्रेरणा दी है। इसके साथ ही सोमप्रभ (1276 ई.) द्वारा रचित 46 पद्यों वाली 'शृंगारवैराग्य–तरङ्गिणी' एक लघु रचना है, जिसमें स्त्री–विषयक प्रेम एवं वासना की निन्दा की गई है। इसमें कवि ने भर्तृहरि की भाँति स्त्रियों के संसर्ग से होने वाली हानियों एवं वैराग्यवृत्ति के महत्त्व का वर्णन किया है। साहित्यिक दृष्टि से यह रचना उत्तम काव्य होने से महत्त्वपूर्ण है और साथ ही इसमें भर्तृहरि के काव्यों का प्रभाव देखा जा सकता है।

नीतिकाव्यकारों में श्री वेङ्कटनाथ, शार्ङ्गपर तथा कुसुमदेव का नाम प्राप्त होता है। इनकी रचनाएँ क्रमशः 'सुभाषित नीवी', 'शाङ्र्गधरपद्धति' तथा 'दृष्टान्तशतक' हैं। इन काव्यकारों के पश्चात् 1434 ई. में कवि धनदराज ने 'नीतिधनदम्' नामक नीतिशतक की रचना की। भर्तृहरि के अन्य शतकों की भाँति इनके दो अन्य शतक 'वैराग्यधनदम्' एवं 'शृंगारधनदम्' शतक हैं। ये तीनों शतक काव्यमाला के त्रयोदश गुच्छक में प्रकाशित हैं। भर्तृहरि के शतकों की शैली के अनुरूप इनके द्वारा रचित शतकों के नाम तथा शतक–संख्या तथा पद्यों की संख्या आदि की दृष्टि से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि धनदराज, भर्तृहरि से प्रभावित रहे हैं और इनकी रचनाएँ एक प्रकार से भर्तृहरि की ही अनुकृति हैं।

द्या द्विवेदी की नीतिपरक रचना 'नीतिम०जरी' है। इसें 200 पद्य हैं और ऋग्वेद पर आचार्य सायण द्वारा कृत भाष्य से निर्देशन ग्रहण कर नीति एवं उपदेश प्रस्तुत किये गये हैं। कतिपय विद्वानों के विचार में द्या द्विवेदी नीतिम०जरी की रचना में क्षेमेन्द्र के चारुचार्य से भी सामग्री एवं प्रेरणा ली है। नीतिकाव्यकारों में पण्डितराज जगन्नाथ का नाम भी उल्लेखनीय है। इनकी कृति का नाम 'भामिनीविलास' है, जो अन्योक्ति, शृंगार, करुण और शान्तविलास नामक चार खण्डों में विभक्त है। इसी प्रकार

नीलकण्ठ दीक्षित के नाम से कलिविडम्बन, सभारंजनशतक, शान्तिविलास और वैराग्यशतक नामक चार नीतिपरक साहित्य मिलते हैं। कलिविडम्बन में कलियुग की परिस्थितियों पर व्यङ्ग्य, सभारंजन में विद्वन्मण्डली एवं राजसभा के लिए आदर्श आचार का वर्णन व्यङ्ग्योक्तियों में है। शान्तिविलास में 51 पद्यों में मानसिक शान्ति की महत्ता वर्णित है और वैराग्यशतक में कवि ने भर्तृहरि की ही भाँति वैराग्यवृत्ति की प्रशंसा की है।

अप्पय दीक्षित का भर्तृहरि की शैली में रचित 'वैराग्यशतक' काव्यमाला के प्रथम गुच्छक में प्रकाशित है। इस प्रकार अप्पय दीक्षित की इस रचना में भर्तृहरि का प्रभाव स्पष्ट है। यहाँ इसके दो पद्य प्रस्तुत हैं –

पितृभिः कलहायन्तेर पुत्रानध्यापन्ति पितृभक्तिम्।
परदारानुपयन्तः पठन्ति शास्त्राणि दारेषु।।
शान्तिरलभ्यादुपरतिरपात्रभावः प्रतिग्रहनिवृत्तिः।
क्षान्तिर्दुर्बलतेति च निवृत्तिधर्माः कलावेते।।[28]

नीतिपरक संस्कृत–साहित्य में गुमानी कवि–कृत 'उपदेशशतक' तथा वेंकटाध्वरी द्वारा रचित 'सुभाषितकौस्तुभ' की भी गणना की जाती है। इनमें मानव–जीवन के लिए नैतिक शिक्षा एवं आदर्श आचार का वर्णन है।

नीतिपरक संस्कृत–साहित्य में तत्त्वज्ञान और शान्तरस का विवेचन हुआ है। नीति का सम्बन्ध अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों से ही रहा है। भर्तृहरि का नीतिशतक जहाँ एक ओर जीवन के व्यवहारों के सम्बन्ध में अनुभूतिपूर्ण उपदेश प्रस्तुत करता है, वहीं वैराग्यशतक जीवन की निःसारता का निरूपण करके मानव–जीवन का लक्ष्य मोक्ष–प्राप्ति के लिए भी उद्‌बोधन करता है। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भर्तृहरि के बाद में रचित नीतिपरक ग्रन्थों में कई दृष्टियों से उनकी रचनाओं का प्रभाव रहा है। इस प्रकार नीतिपरक संस्कृत–साहित्य के लिए भर्तृहरि का योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इन रचनाओं में संसार के सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के गुरुमन्त्र बताए गए हैं। नीति धर्म के अन्तर्गत ही आती है, अतः स्मृति–ग्रन्थों (धर्मशास्त्र) में भी नीतिपरक अनेक उक्तियाँ हैं। नीति सम्बन्धी संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति की नैतिक व्याख्या प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ

1. शुक्रनीति 1.11
2. म.भा., शान्तिपर्व 59.74, 78
3. शतलक्षश्लोकमितं नीतिशास्त्रमथोक्तवान्।। शुक्रनीति 1.2
4. म.भा., शान्तिपर्व 58.89–90
5. वही, शान्तिपर्व 59.74
6. वही, शान्तिपर्व 59.83–84
7. मन्वाद्यैरादृतो योऽर्थस्तदर्थो भार्गवेण वै।
   द्वाविंशतिशतं श्लोका नीतिसारे प्रकीर्त्तिता। शुक्रनीति 4.7.423
8. कौटिलीय अर्थशास्त्र, अधि.1, अ.1, 7, 14, 16; अधि. 2, अ.7; अधि. 3, अ. 6, 11, 17; अधि. 5, अ. 5,6; अधि. 7, अ.1; अधि.8, अ. 1,3; अधि.10, अ.6; अधि. 12, अ.1, अधि. 15, अ. 1
9. तस्यैकदेशिकं मनुः स्वायम्भुवो धर्माधिकारिकं पृथक् चकार।। कामसूत्र 1.6
10. बृहस्पतिरर्थाधिकारिकम्।। वही 1.7
11. स्वयंम्भूर्भगवाँल्लोकहितार्थं संग्रहेण वै।
    तत्सारं तु वसिष्ठाद्यैरस्माभिर्वृद्धिहेतवे।। शुक्रनीति 1.3
12. प०चतन्त्र, मित्रभेद, कथामुख 2
13. शुक्रनीति 1.11, 3.15, 55
14. कामन्दकीय नीतिसार 1.6
15. चाणक्य नीति दर्पण 1.7, 2.11, 3.8, 11
16. नीतिशतक 79
17. वही 84
18. वही 41
19. वही 53
20. वैराग्यशतक 7
21. वही 8
22. वही (हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ता से 1925 ई. में प्रकाशित) 79
23. कुट्टनीमत 287
24. कलाविलास 69
25. दर्पदलन 39
26. सेव्यसेवकोपदेश 58
27. अन्योक्तिमुक्तालता 106
28. वैराग्यशतक (अप्पय दीक्षित) 24–25